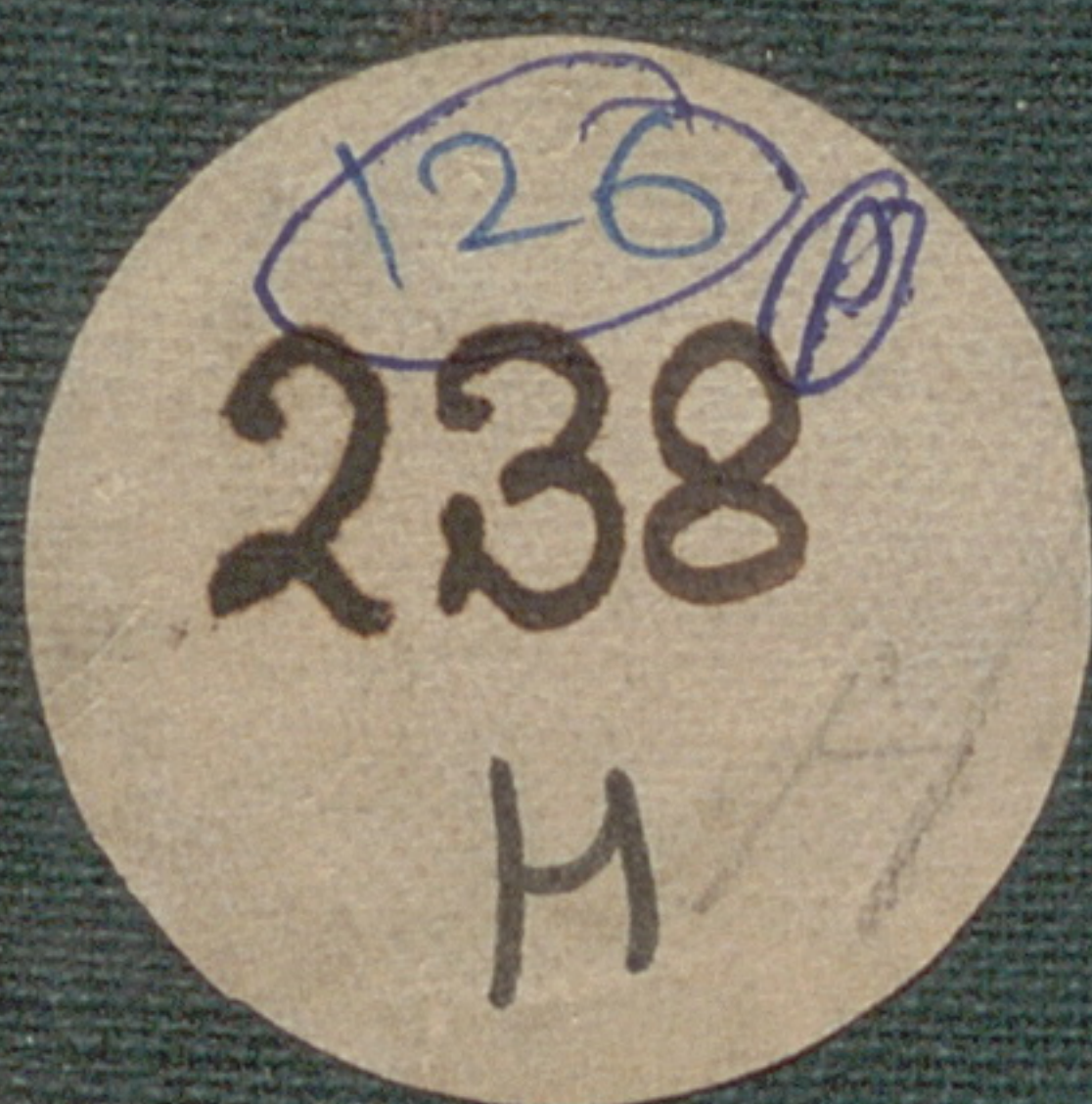




MICROFILM

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY

भारत सरकार
Government of India

नई दिल्ली
New Delhi

1956
10/91

आह्वानांक Call No. _____

अवाप्ति सं० Acc. No. 238

आफत की होली

या

238

राष्ट्रीय फाग



प्रकाशक :—

हिन्दी पुस्तक भंडार,

२५, श्री रामरोड, लखनऊ ।

मू० =)

17/11

891.431
✓ 77 m

18-11

18-11

विना आज्ञा कोई महाशय इसे न छापे ।

“ वन्देमातरम् ”

महत्मा गांधी की स्वदेशी होली

लेखक—

“ विनोद ”

प्रकाशक:—

हिन्दी पुस्तक भंडार,

२५, श्रीराम रोड, लखनऊ ।

इस पुस्तक को छे पैसे से ज्यादा पर कोई न बेंचे ।

इसको न मानने पर कौमी अदालत में

मामला दे दिया जायगा ।

प्रथम बार }
३००० }

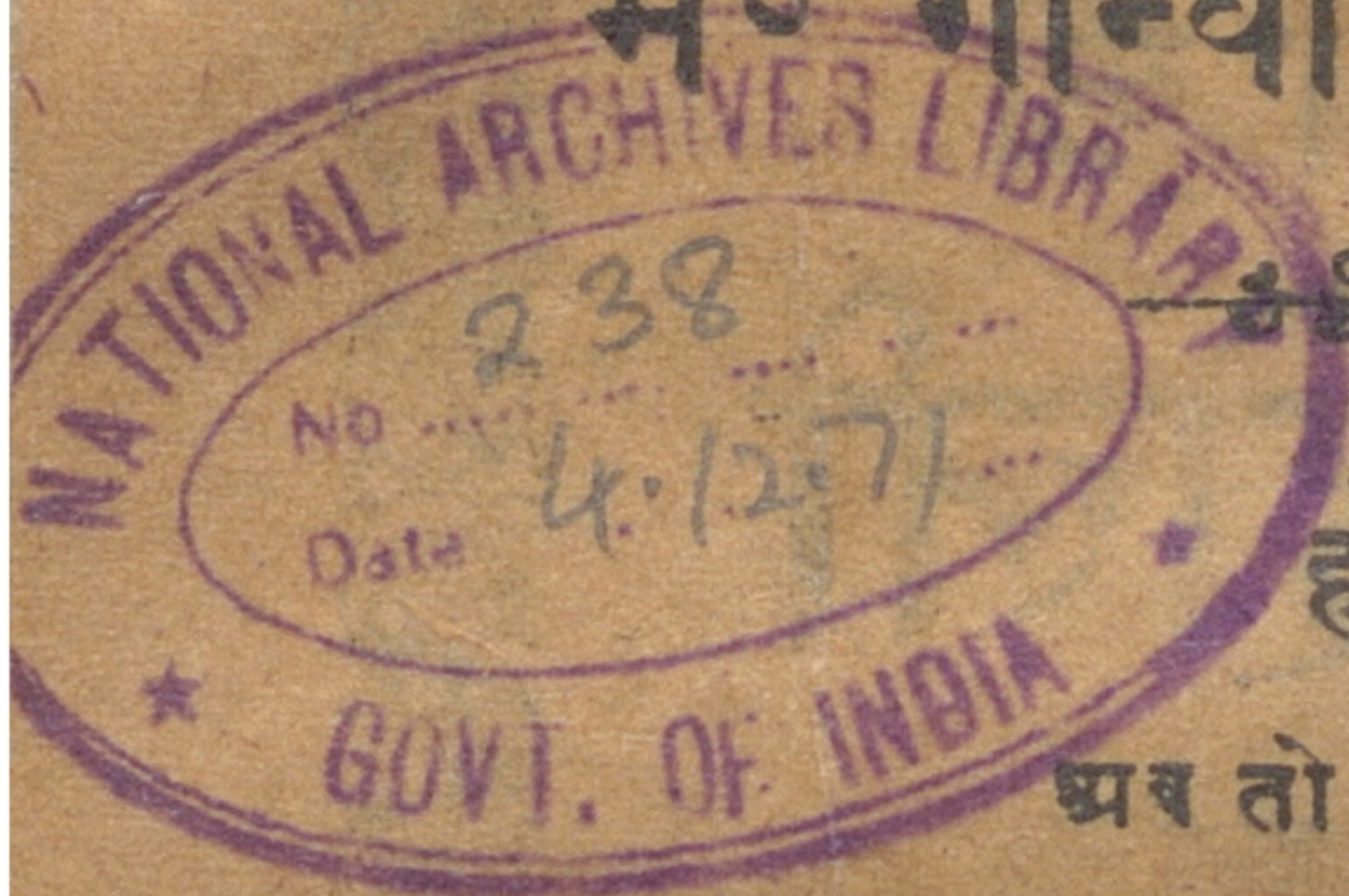
सं० १९७८ वि०
सन १९२२ ई०

{ मूल्य १/॥
छ पैसे }

बाबू चन्द्रमोहनदयाल मैनेजर द्वारा

ऐंग्लो-अरबिक प्रेस, माल रोड, लखनऊ में मुद्रित ।

म० गान्धी की स्वदेशी होली ।



होली नं० १

अब तो छोड़ो विदेशी वाना ।

इसने ही भारत के सारे खाली किये खजाना ।
इससे मोती पन्ना होरा यहँ से संकल विलाना ॥ १ ॥
पाँच सेर रुई लै रुपये की करै देशाडर लदाना ।
ओटि आटि फिर गाँठ बँधाकर करै विदेश रवाना ॥ २ ॥
ओटे हुए विनौलों को तो फिर बाजारन बिकवाना ।
मजदुरन की मजदूरी का इससे करै चुकाना ॥ ३ ॥
विदेशी मोलन में बहुतक तो तानें जावैं ताना ।
पौने चार सेर की रुई में पाँच बनावैं थाना ॥ ४ ॥
फिर एक रुपया के बदले में हमसे लेंय पचास का दाना ।
इस ही से भारत में अब तो हुआ दरिद्र का आना ॥ ५ ॥
रवीन्द्रनाथ जी एक समय में गये थे जब जापाना ।
गुलाम जातिके यह वंशज हैं सुनै न कोई व्याख्याना ॥ ६ ॥
काले, हीदन इन शब्दों से होता कहि अपमाना ।
इससे विदेशी कपड़ा छोड़ो जो होवो तुम दाना ॥ ७ ॥
भारत के तुम सकल बजाजो एका करौ महाना ।
माल विदेशी को न मँगाकर रखो देश के प्राना ॥ ८ ॥
वस्त्र विदेशी के रोकन हित हो सर्वत्र * जुटाना ।
जा हुकुम न कांग्रेस का तो धरना बैठाना ॥ ९ ॥

जो कलंक तुम पर है लागा उसको चहो मिटाना ।
 देश हेतके काम में तुमको होंगे दुःख उठाना ॥ १० ॥
 इसपर सहिये सबको यहँपर आन्दोलन मचवाना ।
 माल विदेशी का लागै नहि देश में कहूँ ठिकाना ॥ ११ ॥
 हिन्दुस्तान के कपड़े ये तो भारी टिकस लगाना ।
 देशी कारबार कपड़ों का इससे सभी नशाना ॥ १२ ॥
 नन्दकुमार देवने इनके कुल को था पहिचाना ।
 करूँ जुलाहों की मैं रक्षा उसने तब था ठाना ॥ १३ ॥
 फटना चहै कपट का पर्दा इनने जब यह जाना ।
 राज द्रोह का दोष लगा कर फाँसी उसे दिलाना ॥ १४ ॥
 गाय सुभर की हड्डिन को फिर अति महीन बुकवाना ।
 इसका कलप लगे कपड़े में सुनलो चतुर सुजाना ॥ १५ ॥
 तासे इसको लेव न कोई चहो जो धर्म बचाना ।
 पाप होय इससे बड़ भारी देश होय बीराना ॥ १६ ॥
 देश भक्त भारत के जोहों उनको यह समझाना ।
 मूर्ख स्वार्थी देशरिपुन को नहि उपदेश सुनाना ॥ १७ ॥
 कहैं बिनोद चेत अब जाओ चहु स्वराज जो पाना ।
 तौ फिर छोड़ि विदेशी कपड़े देशी ही अपनाना ॥ १८ ॥

अररररर कबीर ।

चालाकी से भरी है, यह गोरी सरकार ।
 इस से हिन्दुस्तानियो, तुम रहना होशियार ॥
 भला वादे सब इनके भूँठे हैं ।

होली नं० २

बाजी असहयोग की घीना ।
 अहमदाबाद में गांधी जी ने छेड़े राग फिर तीना ।
 सत्याग्रह असहयोग स्वदेशी समझे सकल प्रवना ॥ १ ॥

भारत की नर नारिन को फिर इसने मोहित कीना ।
 बहुत कीमती वस्त्र विदेशी डालि अग्नि में दीना ॥ २ ॥
 चर्खा अरु कर्घा को चलाओ जो चाहो स्वाधीना ।
 स्वराज्य को पैहो तुम निश्चय रहो न पर आधीना ॥ ३ ॥
 फाँसी चढ़कर गोली सहकर होगा विषका पीना ।
 बड़ी बड़ी फौजों के सम्मुख हम तानेंगे सीना ॥ ४ ॥
 देश भक्तोंने गवर्मेन्ट की जेलन को भरदोना ।
 इससे गोरी शाही के तन आयो बड़ा पसीना ॥ ५ ॥
 सत्याग्रह में वे भर्तीहों जो हों धरम धुरीना ।
 अहिंसा व्रत से टरें न कबहूँ चहे तन होवै छीना ॥ ६ ॥
 पोट आर्थर किलेपें जैसे जापानिन ने कीना ।
 वैसे ही जुट जाओ भारती जो तुम चाहो जीना ॥ ७ ॥
 सत्याग्रह स्वराज्य की औषधि हैगी एक नवीना ।
 भारत के उद्धार करन हित प्रभुने अर्पण कीना ॥ ८ ॥
 असहयोग में करो न भर्ती जो हों चरित विहीना ।
 कहैं विनोद यों गड़ बड़ होगी मन में रखो यकीना ॥ ९ ॥

अररररर कबीर ।

रगड़ो तक निज देश हित, बहुतक भई तयार ।
 माडरेट इनसे गये बीते, बैठे हिम्मत हार ॥

भला समझें स्वराज्य रस गुलजा है ।

होली नं० ३

छिड़ी है अब स्वराज्य की तान ।

कलकत्ते की महा सभा में बैठे चतुर सुजान ।
 गाँधी जीने गाई रागिनी बैठि श्याम कल्पान ॥ १ ॥
 यह अमृत की वर्षा वर्षी सभा सदों के कान ।
 लाला जी गाँधी से बोले फेरि सुनाओ आन ॥ २ ॥

दीपक में श्री गांधी जी ने गाया गीत महान ।
 असहयोग धुरण्ड के माने सब ने लीन्हे मान ॥ ३ ॥
 अहमदाबाद की महा सभा ने देकर पूरा ध्यान ।
 असहयोग के पूर करन हित करन लगे सामान ॥ ४ ॥
 छोटे बड़े लाट सब मिलकर की चातुरी महान ।
 गैर कानूनी स्वयं सेवक हैं यह कीन्हा पतान ॥ ५ ॥
 पकड़ धकड़ को ज़ारी करिके अपनी दिखाई शान ।
 मार कूट अरु गोली वमसे लीन्ही बहुतक जान ॥ ६ ॥
 इधर गांधी दल भी आकर डटा आय मैदान ।
 दमन नीति अरु असहयोग संग होन लगी घमसान ॥ ७ ॥
 सरकारी जेलें सब भरदी देश पै हो कुर्वान ।
 यह हालत लखि नौकर शाही बहुत भई हैरान ॥ ८ ॥
 विदुर रूपधरि मालवि आये दोनों के दर्शन ।
 कहैं विनोद न निर्णय होगा निश्चय लो तुम जान ॥ ९ ॥

अररररर कबीर ।

चापलूसी से स्वराज न मिलता, तुम्हें देयँ समुझाय ।
 इसमें जो तुमको शक होवे, तारीखें पढ़ जाव ॥
 भला फिर झूठी जिद क्यों करते हो ।

होली नं० ४

अब गांधी ने होली मचाई ।

चरडोली में सत्याग्रह की सुन्दर बेलि लगाई ।
 असहयोग के जल को पाकर लहर लहर लहराई ॥ १ ॥
 भारतवर्ष में जो फैशन था उसको दियो बहाई ।
 खदर और सादगी सब कहिं सबको परै दिखाई ॥ २ ॥
 जैसे लछमन को सुखेण ने संजीवनी खिलाई ।
 खाते ही भीलछमन जैसे उठि बैठे हरखाई ॥ ३ ॥

बेसे महात्मा ने भारत को घूटी दर्ई पिलाई ।
 सब यह मुर्दा से ज़िन्दा हो सबको परो लखाई ॥४॥
 रीडिंग ने असहयोग दमन को हुकुम दियो गोहराई ।
 गान्धी दल के जवाब ने तो उन्हें दियो शर्माई ॥५॥
 लन्दन के पार्लियामेण्ट में दीन्हो दुन्द मचाई ।
 गान्धी का दल बागी हैगा यहि का देव नशाई ॥६॥
 ईश्वर के यह सच्चे भक्त हैं सुनलो कान लगाई ।
 इसीलिये घट घट का व्यापक इनकी करै रखाई ॥७॥
 कहैं विनोद वाट सत्याग्र होगी अति सुखदाई ।
 इस परही यह भारत चल कर स्वराज्य को पा जाई ॥८॥

अररररर कबीर ।

सात लाख वेश्या भई, अरु भई बहुतक वेधर्म ।
 तुम अब भी वेशोश पड़े हो, बनि पूरे वेशर्म ॥
 भला मर्दुम शुमारि को पढ़ि देखो ।

होली नं० ५

अब तो उठो किसानो किसानो भाई ।

नज़राना वेगार आदि में देव न पैसा जाई ।
 लगान क पैसा हो जो तम पै उसकी अद ई ॥ १ ॥
 जो बातें हम समुझावत हैं इन्है न देव भुलाई ।
 लुट पाट अरु मार तोड़ तो बवों न देय दिखाई ॥ २ ॥
 गाँवन में जो बदमशवा हों उनको देव समुझाई ।
 उनके संग कगहुँ जो परि हो तौ फिर जाव नशाई ॥ ३ ॥
 गाँवन गाँवन में पञ्चायत जल्दी लेउ बनाई ।
 न्याय धरम से करो फैसला आपस में हरखाई ॥ ४ ॥

अत्याचार के दुर करन का गाँधी दियो पठार्ई ।
 असहयोग ही इसकी औषधि प्रभुने तुम्हें बताई ॥ ५ ॥
 देशी शिक्षा वस्त्र आदि सब देव गाँवन फैलाई ।
 कहै विनोद यहै गाँधी की आज्ञा है सुखदाई ॥ ६ ॥

होर्ला ६

अब तो चेतो भारत भाई ।

लीद, मूत, कीचड़ का फेंकना नहीं उचित दिख जाई ।
 यह सब काम कमीनन के है देय तुम्हें समुझाई ॥ १ ॥
 पर नारी पर विटियन को लखि गाओ न गाली भाई ।
 यह सब काम मुखों नेही सब कहि दिये चलाई ॥ २ ॥
 अब तो साठ घरस के डुकाग करते व्याह सगाई ।
 आप जाय मरघट में पहुँचे गाड़ें दर्ई बिठाई ॥ ३ ॥
 छुटपन में लड़का लड़किन की करते व्याह सगाई ।
 वे बल बुद्धी से विहीन है भगते दुःख सदाई ॥ ४ ॥
 निर्वल बीज के पौधे जैसे देवै पवन गिराई ।
 औलादैँ कमजोर बीज की त्यों मरती अधिकारी ॥ ५ ॥
 तीन कोटि बेवा इसही से भागत देय दिखाई ।
 बेवा सात लाख इनमें से बेठी चकला जाई ॥ ६ ॥
 गर्भ गिराने की हत्या से चाहो जो बचिजाई ।
 तो सज धज हो प्यारा जिनको देआ व्याह कराई ॥ ७ ॥
 शुभ लच्छन की जो विधवा हों उनकी करौ सहाई ।
 ऐसे काम करन से तुमको होय पुण्य अधिकारी ॥ ८ ॥
 न्याय सहित जो निर्वल होवै उसकी करौ सहाई ।
 अन्याई जो महा बली हो उसको देउ नसाई ॥ ९ ॥

भारत वर्ष यह सोय रहा था गहरी नींद में जाई ।
 ऋषी दयानन्द ने यह आकर सबको दिया जगाई ॥ १० ॥
 सावधान हो सकल भारती तज दो सकल बुराई ।
 कहैं विनोद व्यवहार धिनोंने यह से के देउ बहाई ॥ ११ ॥

होली ७

अब तो छोड़ो मद का पीना ।

गाँजा भंग शराब चर्ख अरु हैं अफीम में लीना ।
 तन्दुरुस्ती चौपट हो पहिले फिर तन होवे छीना ॥ १ ॥
 धन दौलत सब अपनि गँवा कर हो गये पर आधीना ।
 मारे भूखन सब घर तलफ़ै मिलता नही चबेना ॥ २ ॥
 मनुषयानि अति नीकि पायकै ध्यान कबहुँ नहिं दीना ।
 नशे खाय कर तुमने अब तो राक्षस पद को लीना ॥ ३ ॥
 गान्धी जी ने तुम को अब तो दीन्हा ज्ञान नगीना ।
 हिन्दुस्तानी नशा न पीवै चहैं जो सुख से जीना ॥ ४ ॥
 सोने कि लंक इसीसे नलि गई रवन भये मति हीना ।
 सब परिवार नशा कर अपनो भये धम के आधीना ॥ ५ ॥
 * पेयाशी में तुमने अपनो सब धन अर्पन कीना ।
 ऐसे कामन से नलि जैहो कहते सकल प्रवीना ॥ ६ ॥
 इससे भारत वासी अब तो हो जावो दोष विहीना ।
 कहैं विनोद सुनो सब भाई अब तुम नशा न पीना ॥ ७ ॥

अररररर कबीर ।

झहर पहिरो चरखा कातौ, कसब को देउ हटाय ।
 तुम्हरे लिये गांधी जी ने, दियो यही चतराय ॥

भला यह हुकुम महात्मा गांधी का ।

* सात लाख वेश्याओं की आमदनी ६२ करोड़ है ४५००००००००

होली ८

देश पर हो जावो कुर्बान ।

सरकारी नौकर अरु फ़ौज़ो रखो देश का मान ।
 अपने देश की रक्षा के हित अर्पण करदो प्रान ॥ १ ॥
 भारत के व्यापारी मिल कर कंगे स्वार्थ का दान ।
 जिससे हरा भरा भारत हो याँरय हो वीरान ॥ २ ॥
 माल विदेशी के ही कारण धन का मिटा निशान ।
 सब मिलि जब तुम बन्दिश करिहौ तब हों सुख सामान ॥ ३ ॥
 ईसाई, अरु, आर्य मुसलमा एका करो महान ।
 मतवाली नौकरशाही तो होगी अति हैरान ॥ ४ ॥
 परमेश्वर की सृष्टि जान कर करौ सबन का मान ।
 कुआ कुत का त्यागन करना गांधी का फरमान ॥ ५ ॥
 अवलन पर पंजाब प्रान्त को हो अन्याय महान ।
 ऐसी हालत में मरना तो होगा स्वर्ग समान ॥ ६ ॥
 चर्खे अरु कर्घे से रक्खो अपने देश की शान ।
 कांठि पछुत्तर इससे बचिहै सुन लो चतुर सुजान ॥ ७ ॥

अरररर कबीर ।

पीर मदारन अरु भुइन को, दुनिया पूजै धाय ।
 जो प्रभु घट घट का व्यापक है, ताहि दियो विसराय ॥
 भला इसही से दुनिया दुखी भई ।

करोड़ तमाखू शिगरट और मांग, अफीम, गाँजा, चर्ख, शराब
 यह भी इतनी खर्च होती है । एक अरब व साठ करोड़
 देश का धन व्यर्थ जाता है ।

होली नं० ६

अब तो छोड़ो आस पराई ।

जिसने भोजन दिया गर्भ में वह सब करै सहाई ।
 वही ईश्वर भोजन देगा संशय नहीं है भाई ॥ अब० १ ॥
 इसी अर्थ नी नेहीं है तुमको बेड़ी है पहिराई ।
 अच्छी बात तीकिना लागे उलटी परै दिखाई ॥ अब० २ ॥
 गाँधी का उपदेश बीज यह धरती गया समझाई ।
 इसमें से शाख फूटैगी भारत देय जिलाई ॥ अब० ३ ॥
 एक तरफ नौकर शाही दल देय महान दिखाई ।
 दुसरी तरफ कृष्ण सम गाँधी सबको परै तखाई ॥ अब० ४ ॥
 न्याय हीन कौरव की सेना जैसे गई नसाई ।
 वैसे ही अन्यायी शासन जैहै तुम से पराई ॥ अब० ५ ॥
 दे सुबुद्धि तगदीश बृटिस को देय स्वगज्य दिलाई ।
 नाहीं तो फिर असह योग का भगड़ा यह फहगाई ॥ अब० ६ ॥
 मार काट करू खून खराबी कोई ना करियो भाई ।
 कहै बिनोद सब मिलि मानहु यह शिक्षा सुखदाई ॥ अब० ७ ॥

अररररर कबोर ।

पहिले के ब्राह्मण हते, करै बेद शास्त्र उपदेश ।
 अब के ब्राह्मण गाली गावैं, बने फिरै बेवफूफ ॥
 भला इनका मुँह देखै सो पापी ।

होली नं० १०

अब तो तजो मांस का खाना ।

हिन्दु अरु ईसाई मुसलमाँ जो होवो तुम दाना ।
 उठायदो पुरी दुनियाँ से सारे कसाई खाना ॥ अब० १ ॥

दही दूध की दीजी मंशी नै तुमको श्रीभगवाना ।
 इनका जो तुम नास करो तो नाहीं होई इंसाना ॥ अब० २ ॥
 इस पर जो तुम ध्यान न देहो होगा दुःख उठाना ।
 फिर दूध मलाई घी आदिक होइ जैहैं इंसमाना ॥ अब० ३ ॥
 सौ रुपया पर सौ रुपया जब देना पड़ी लगाना ।
 एक हजार की गोई मिली जब तब होई होश ठिकाना ॥ अब० ४ ॥
 अकाल और बीमारिन में पशु होवेंगे वे जाना ।
 माथ पकरि तब रोआंगे तुम सऊना किया बयाना ॥ अब० ५ ॥
 म्यूनिस पालिटी डेरीफारम प्रभु ने रचे महाना ।
 इनको नशा कर तुम सब जैहो दाजख वं दर्मयाना ॥ अब० ६ ॥
 फिर्दौसी के शह नामें में लिखवा यही दिखाना ।
 अगडा मांस आदि का भोजन है शैतानी खाना ॥ अब० ७ ॥
 हिन्दुन को अपने मुर्दों को नंगा होगा जलाना ।
 मुसलमान ईसाई मुर्दे नंगे हों दफनाना ॥ अब० ८ ॥
 राजा ज़िमीदार सब खोलिहैं खेतिन के कसखाना ।
 तबही खेत निकल सब जैहैं सुनलो सकल किसाना ॥ अब० ९ ॥
 पिरथी पर जब ठोर न गदिहैं मिल न तुमको दाना ।
 कहै विनोद हाथ तब तुमरे रहिहैं हाड़ चबाना ॥ अब० १० ॥

अरररर कबीर ।

नारी पूजा होत जहँ, करत देवता वास ।

जहाँ अनादर इनका होवै, वहाँ का होय विनाश ॥

भला जूती फिर कहना अनुचित है ।

होली नं० ११

ठनेगी सत्याग्रह की ठान ।

गोरी शाही से ना मिलहै तुमको एक छदाम ।

हमने तुमको बतला दीन्हा सच्चा यह अनुमान ॥ ठनेगी० १ ॥

कौरव पाण्डव दोऊ दल में मालवि बिदुर समान ।
 दुर्योधन सम गवतमें नट से अविश होय अपमान ॥ ठने० २ ॥
 इससे मालवि दल में होगी हल चल बड़ी महान ।
 यह हालत जब देश में होगी तब होगा उत्थान ॥ ठने० ३ ॥
 गाँधी जब गुजरात देश में करिहैं बन्द लगान ।
 निश्चय कैद किये जायेगे मूरत के दर्शान ॥ ठने० ४ ॥
 फिर तो काम होयगा दुना सुनलो चतुर सुजान ।
 गीठह सब बिलमें घुसि जैहैं सिंह दहड़िहैं आन ॥ ठने० ५ ॥
 हिंसा कहूँ न होन पावे रखना यह तब ध्यान ।
 अपना काम करे सब जाना मूल न होय निदान ॥ ठने० ६ ॥
 चर्खा कर्घा खूब चला कर रखना देश का मान ।
 यहै गांधी देंगे तुमको अपना तब फर्मान ॥ ठने० ७ ॥
 सरकारी नौकर अरु कौजी होंगे बहु कुर्बान ।
 नौकरशाही तबढीली है माथ नचाई आन ॥ ठने० ८ ॥
 केवल सत्याग्रह से मिलिहै स्वराज का अस्थान ।
 कहैं विनोद देश बासी अबदा सत्याग्रह मान ॥ ठने० ९ ॥
 कहैं विनोद कड़ी मिमत कर यह धरलो उर ध्यान ।
 धर्म अहिंसा यह स्वगत क्या हैगा अगप्रधान ॥ ठने० १० ॥

अररररर कबीर ।

रामायण के लंकाकाण्ड में, लिखवा पढ़ लेव जाय ।
 ब्राह्मण से राक्षस बना, मद्य मांस को खाय ।
 भला यह रामायण में पढ़ि देखो ।

होली १२ ॥

मची है भारत में धमसान ।

गन मशीन यन्दुक तोप अरु लै फौजी सामान ।
 नौकर शाही के संग रीडिंग आय डटै मैदान ॥ १ ॥

इधर महात्मा गांधी ने भी लिया चक्र अब तान ।
 असहयोग का शंख बजाकर छेड़ दिया संग्राम ॥ २ ॥
 मार कूट अरु गोली आदि से चोटें करै महान ।
 अपनी निहत्थी प्रजा के ऊपर ब्रिटिश दिखाती शान ॥ ३ ॥
 फिर गांधी दल ने भी छोड़ी चरखा ताप महान ।
 लंकाशायर मैनचेस्टर तो जिससे भये वीरान ॥ ४ ॥
 यह हालत भारत को लखि कै गोरे भये हैरान ।
 कहैं सबेरे या प्रभु ईशा कैसे बचि है प्रान ॥ ५ ॥
 कहैं विनोद देश पर सब मिलि हो जाओ कुर्बान ।
 पहिले इससे स्वराज्य मिलि है फिर हो नाम जहान ॥ ६ ॥

होली १३ ॥

उठो अब भारत की सन्तान ।

पहिले यहाँ के सकल विप्रगण करते श्रुति गान ।
 अब तो गाली बकते फिरते तज करके कुल कान ॥ १ ॥
 राजागण यहाँ पर ऐसे थे करते प्रजा का मान ।
 अब तो प्रजा का नाश कराकर चढ़ते हैं कल्याण ॥ २ ॥
 कृषि गोरक्षा बणिज आदि में थे बनिये विद्वान ।
 अब तो व्याज दलाली में ही समझें अपनी शान ॥ ३ ॥
 फिर शूद्र आदि जातिन में बहुतकहाते थे गुण वान ।
 अब तो वह भी बिलकुल बिगरे कर कर मदिरा पान ॥ ४ ॥
 कच्चा माल देश में राखौ जो चाहो निजमान ।
 चर्खा कच्ची चलै देश में तब होगा उत्थान ॥ ५ ॥
 असहयोग की ढाल बना कर डटो आय मैदान ।
 आध्यात्मिक शक्ती तब लखकर होगा ज्वित जहान ॥ ६ ॥
 भारतवर्ष कला कौशल में था पूरा मतिमान ।
 अब तो काला काफिर कहते सुनो सकल दे कान ॥ ७ ॥

द्वारा, गामा, रामभूर्ती हैं परसिद्ध जहान ।

पुरुष के सैंडो आदिक का किया चूर अभिमान ॥ ८ ॥

यथम यहाँ पर भीम भीष्म से होते थे बलवान ।

ब्रह्मचर्य हो पालन उनका सच्चा है परमान ॥ ९ ॥

पच्छिम दुनियाँ चली जात थी तज कर अपना ज्ञान ।

अब उसको पूरव लावेंगे गान्धी से विद्वान ॥ १० ॥

भारत वर्ष हुआ अति जर्जर सूखा उसका पान ।

शिवि दधीच सम दानी बनकर करो आत्म बलिदान ॥ ११ ॥

कहैं विनोद अत्याचारों से पीड़ित हुआ महान ।

उठो शीघ्रही भारत वीरो रखो देश का मान ॥ १२ ॥

होली नं० १४ ॥

सकल मिलि होली ऐसी मचाओ ।

पर नारी पर विटियन को लखि कमीन गाली गाओ ।

यह सब काम कमीनन के हैं समझो अरु समझाओ ॥

हर सिंघार, तुन, कुसुम अरु टेसू सब मिलि यही घुराओ ।

भरि पिचकारी हारिहारिन की टोली पर बरसाओ ।

गुलाल अवीर अरु रंग विदेशी कोई ना मोल मँगाओ ।

कपूर केसर चन्दन घिस कर सबके माथ लगाओ ॥

हिन्दू आर्य मुसलमां सब मिलि प्रेम भाव दर्साओ ।

द्वेष, ईर्ष्या, जलन दुरि कर एक दिल अब हो जाओ ॥

भगड़े का अब समय नहीं है मन यह सब लाओ ।

सब मिलि देश सुधारन के हित शक्ती खुब लगाओ ॥

देशी शिक्षा बख्श आदि सब अपने देश फैलाओ ।

निश्चय जीत होयगी तुम्हरी इसमें झूठ न पाओ ॥

कहैं विनोद सुनो सब भाई अब ना देर लगाओ ।

बहु उपदेश रखो जब चित में तब स्वराज्य पा जाओ ॥

करो सब मिलि अछूत उद्धार ।

मंगी, पासी, धानुक, कांरी, धोबी खटिक चमार ।
 भारत के दश कांठि पुत्र हैं इनका करौ पियार ॥ १ ॥
 छुआ छूत के इस भगड़े को यह से देव निकार ।
 चारिउ वरणा प्रेम से बैठो देशो घृणा विसार ॥ २ ॥
 गाम जपै अरु चोटी रक्खें तब देने दुत्कार ।
 वहै विधर्मी जब हो जावे तब करते सत्कार ॥ ३ ॥
 सुप सुहाग कलफ कपड़े का करते सब व्योहार ।
 इनके धौखे में छूने से करते क्रोध अपार ॥ ४ ॥
 परमेश्वर के इन पुत्रन सों करो न नफरत यार ।
 छुआ छूत की गठरी को तुम दो होली में डार ॥ ५ ॥
 ऐसे अनाड़ी पन को तज कर मनमें करो विचार ।
 करौ नाश इस उलटी मति का ज्ञान अग्नि में डार ॥ ६ ॥
 विजय भोज में भयो अपमानित सलावदी सदाँर ।
 इसके कारण रानासाँगा गये बाबर से हार ॥ ७ ॥
 जाति अछूतन की उन्नति को लेवो सब मिलि धार ।
 कहै विनाद बेड़ा स्वराज्य का होगा इससे पार ॥ ८ ॥

अररररर कबीर ।

नौकर शाही से युद्ध करन हित, गाँधी भये तयार ।
 भारत वासी अब संग देवहु, हो जाय बेड़ा पार ॥

भला बम असहयोग का गोला है ।

होली नं० १५ ॥

सदा अनन्द रहै यह भारत सब मिलि खेलै होली हो ।
 नारिन को लखि गाली देना यही कमीनी बोली हो ॥

हर सिंघार तुन कुसुम अरु टेसू सब मिलि लेओ घोली हो ॥
 भरि पिचकारिन रंग बर्साओ होरिहारन के टोली हो ॥
 अंबीर गुलाल, रंग सबै विदेशी कोइना लेओ मोली हो ।
 इससे तुम्हरे देश का पैसा जाय विदेशिन ओली हो ॥
 बातें कह कर फूहर गन्दी कोइ ना करो ठठोली हो ।
 मीठी और रसीली प्यारी सच्ची बोली बली हो ॥
 नौकर शाही की होली पर तंग हो गई चोली हो ।
 छुआ छूत का भूत हटा कर मिलो सबन दिल खोली हो ॥
 प्रेम गुलाल एका अंबीर का भर भर डालो भोली हो ।
 दमन नीति से नेक न डरना इसकी जड़ है पोली हो ।
 सबके मुहें पर कपूर केसर चन्दन डालो घोली हो ।
 विनोद तुमको समझाते हैं सत्य तुला पर तोली हो ॥

अररररर कबीर ।

जैसे दूब काटने पर तो, लहर लहर लहराय ।
 तैसे ही असहयोग दमन से, दूना परी दिखाय ॥

भला भारत की विजय अवशि होगी ।

-
- * गुलाल और अंबीर में विदेशी रंग पड़ता है । इस लिये इन को मोल लेने से देश का पैसा बाहर चला जाता है ।
 - * जो इन्हें लेने में असमर्थ हों वे टेसू काम में लावें ।



पुस्तक मिलने का पता:—

हिन्दी पुस्तक भंडार

२५, श्रीराम रोड, लखनऊ ।

ਸਰਕਾਰੀ ਦਫਤਰੀ ਦਸਤਖਤ

ਸਰਕਾਰੀ ਦਫਤਰੀ ਦਸਤਖਤ

ਸਰਕਾਰੀ ਦਫਤਰੀ ਦਸਤਖਤ

ਸਰਕਾਰੀ ਦਫਤਰੀ ਦਸਤਖਤ

ਸਰਕਾਰੀ ਦਫਤਰੀ ਦਸਤਖਤ

ਸਰਕਾਰੀ ਦਫਤਰੀ ਦਸਤਖਤ

ਸਰਕਾਰੀ ਦਫਤਰੀ ਦਸਤਖਤ

ਸਰਕਾਰੀ ਦਫਤਰੀ ਦਸਤਖਤ

ਸਰਕਾਰੀ ਦਫਤਰੀ ਦਸਤਖਤ

ਸਰਕਾਰੀ ਦਫਤਰੀ ਦਸਤਖਤ

ਸਰਕਾਰੀ ਦਫਤਰੀ ਦਸਤਖਤ

ਸਰਕਾਰੀ ਦਫਤਰੀ ਦਸਤਖਤ

हिन्दी पुस्तक भंडार

२५, श्री रामरोड लखनऊ ।

की

प्रकाशित पुस्तकें

—:०:—

आफ़त की गज़लें	...	...	...	)॥
निराली बहार	...	...	...	)॥
गांधी का बोलबाला,	...	...	...	)॥
दुखिया किसान या किसानों की बरबादी			...	)॥
म० गांधी का सत्याग्रह संग्राम		...	...	)॥
महात्मा गांधी की स्वदेशी होली या राष्ट्रीय कबीरें			...	=)
आफ़त की होली या राष्ट्रीय फ़ाग		...	...	=)



ऊपर का सिर्फ़ टाइटिल (कवर) पेज कृष्ण प्रेस, प्रयाग में छपा ।